पाठ – सूरदास के पद

शब्दार्थ –

1. कबहिं	–	कब
2. किती	–	कितनी
3. पियत	–	पिलाना
4. अजहूँ	–	आज भी
5. बल	–	बलराम
6. बेनी	–	चोटी
7. लाँबी-मोटी	–	लंबी-मोटी
8. काढ़त	–	बाल बनाना
9. गुहत	–	गूँथना
10.न्हवावत	–	नहलाना
11.नागिन	–	नागिन
12.भुइँ	–	भूमि
13.लोटी	–	लोटने लगी
14.काचौ	–	कच्चा
15.पियावति	–	पिलाती
16.पचि-पचि	–	बार-बार
17.माखन	–	मक्खन
18.चिरजीवी	–	चिरंजीवी (चिर – लम्बे समय तक, जीवी – जीवित = दीर्घायु हो)
19.दोउ	–	दोनों
20.हरि-हलधर	–	कृष्ण-बलराम (हलधर – हल को धारण करने वाले)
21.जोटी	–	जोड़ी
22.लाल	–	बेटा
23.आपही	–	अपने आप
24.किवारि	–	दरवाजा
25.पैठि	–	घुसकर
26.सखनि	–	दोस्त/मित्र
27.उखल	–	ओखली
28.चढि	–	चढ़ना

egyanarchive

29.सींके – छिका
30.अनभावत – जो अच्छा न लगे
31.भुइँ – भूमि
32.ढरकायौ – गिरना
33.हानि – नुकसान
34.होति गोरस – गाय के दूघ से बने पदार्थ
35.ढोटा – लड़का
36.हटकि – हटाकर
37.पूत – पुत्र
38.अनोखौ – अनोखा
39.जायौ – जन्म देना

व्याख्या –

1- मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी-मोटी।
काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै, नागिन सी भुइँ लोटी।
काचौ दूध पियावत पचि-पचि, देति न माखन-रोटी।
सूर चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।

egyanarchive

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक "वसंत भाग-3" में सूरदास द्वारा रचित 'सूरदास के पद' से अवतरित है।
प्रसंग – इसमें सूरदास जी ने श्री कृष्ण की बाल लीला का वर्णन किया है।
व्याख्या – सूरदास जी बताते हैं कि श्री कृष्ण बालपन में यशोदा से पूछते हैं कि उनकी चोटी कब बढ़ेगी, यह आज तक क्यों नहीं बढ़ी। वह माँ यशोदा से शिकायत करते हैं कि तुम मुझसे कहती थी कि जैसे बलराम भैया की लंबी-मोटी चोटी है, मेरी भी वैसी हो जायेगी। तू मेरे बाल बनाती है, इन्हें धोती है पर यह नागिन की तरह भूमि पर क्यों नहीं लोटती। तू मुझे सिर्फ बार-बार दूध पिलाती है, मक्खन व रोटी खाने को नहीं देती। इसलिए ये बड़ी नहीं होती। सूरदास जी कहते हैं कि ऐसी सुन्दर लीला दिखाने वाले दोनों भाई कृष्ण और बलराम की जोड़ी बनी रहे।

2- तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ।
दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढ़ि-ढँढ़ोरि आपही आयौ।
खोलि किवारि, पैठि मंदिर मैं, दूध-दही सब सखनि खवायौ।

उफखल चढ़ि, सींवेफ कौ लीन्हौ, अनभावत भुइँ मैं ढरकायौ।
दिन प्रति हानि होति गोरस की, यह ढोटा कौनैं ढँग लायौ।
सूर स्याम कौं हटकि न राखै तैं ही पूत अनोखौ जायौ।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक "वसंत भाग-3" में सूरदास जी द्वारा रचित 'सूरदास के पद' से अवतरित है।

प्रसंग – इसमें सूरदास जी ने श्री कृष्ण की गोपियों के साथ शरारतों का वर्णन किया है।

व्याख्या – सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ सदा श्री कृष्ण की शिकायत यशोदा माँ से करती रहती है। एक गोपी यशोदा जी को कहती है कि आपका लाल मेरा मक्खन खा जाता है, दोपहर के समय जब उसका घर खाली होता है, तो कृष्ण स्वयं ही ढूंढकर घर आ जाते हैं। वह हमारे मंदिर के दरवाज़े खोलकर उसमे घुस जाते हैं तथा अपने मित्रों को दही-मक्खन खिला देते हैं। वह ओखली पर चढ़कर छीके तक पहुँच जाते हैं तथा मक्खन खा लेते हैं, और बहुत सारा मक्खन भूमि पर गिरा देते हैं। जिससे हर रोज़ दूध-दही का नुकसान कर देते हैं, गोपियाँ कहती हैं कि आपका यह बेटा कैसा है जो हमें सताता हैं। सूरदास जी कहते हैं कि फिर भी उसे अपने से अलग नहीं करा जा सकता। यशोदा तुमने सबसे अनोखे बेटे को जन्म दिया है।

प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?
उत्तर: माता यशोदा ने श्रीकृष्ण को बताया की दूध पीने से उनकी चोटी बलराम भैया की तरह हो जाएगी। श्रीकृष्ण अपनी चोटी बलराम जी की चोटी की तरह मोटी और बड़ी करना चाहते थे इस लोभ के कारण वे दूध पीने के लिए तैयार हुए।

प्रश्न 2. श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?
उत्तर: श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में सोच रहे थे कि उनकी चोटी भी बलराम भैया की तरह लम्बी, मोटी हो जाएगी फिर वह नागिन जैसे लहराएगी।

प्रश्न 3. दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौन-से खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं?
उत्तर: दूध की तुलना में श्रीकृष्ण को माखन-रोटी अधिक पसंद करते हैं।

प्रश्न 4. 'तैं ही पूत अनोखी जायौ' – पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौन-से भाव मुखरित हो रहे हैं?
उत्तर: 'तैं ही पूत अनोखी जायौ' – पंक्तियों में ग्वालन के मन में यशोदा के लिए कृष्ण जैसा पुत्र पाने पर ईर्ष्या की भावना व कृष्ण के उनका माखन चुराने पर क्रोध के भाव मुखरित हो रहे हैं इसलिए वह यशोदा माता को उलाहना दे रही हैं।

egyanarchive

प्रश्न 5. मक्खन चुराते और खाते समय श्रीकृष्ण थोड़ा-सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?
उत्तर: श्रीकृष्ण को माखन ऊँचे टंगे छींकों से चुराने में दिक्कत होती थी इसलिए माखन गिर जाता था तथा चुराते समय वे आधा माखन खुद खाते हैं व आधा अपने सखाओं को खिलाते हैं। जिसके कारण माखन जगह-जगह ज़मीन पर गिर जाता है।

प्रश्न 6. दोनों पदों में से आपको कौन-सा पद अधिक अच्छा लगा और क्यों?
उत्तर: दोनों पदों में प्रथम पद सबसे अच्छा लगता है। क्योंकि यहाँ बाल स्वभाववश प्राय: श्रीकृष्ण दूध पीने में आनाकानी किया करते थे। तब एक दिन माता यशोदा ने प्रलोभन दिया कि कान्हा ! तू नित्य कच्चा दूध पिया कर, इससे तेरी चोटी दाऊ (बलराम) जैसी मोटी व लंबी हो जाएगी। मैया के कहने पर कान्हा दूध पीने लगे। अधिक समय बीतने पर श्रीकृष्ण अपने बालपन के कारण माता से अनुनय-विनय करते हैं कि तुम्हारे कहने पर मैंने दूध पिया पर फिर भी मेरी चोटी नहीं बढ़ रही। उनकी माता से उनकी नाराज़गी व्यक्त करना, दूध न पीने का हट करना, बलराम भैया की तरह चोटी पाने का हट करना ह्रदय को बड़ा ही आनंद देता है।

प्रश्न 7. दूसरे पद को पढ़कर बताइए कि आपके अनुसार उस समय श्रीकृष्ण की उम्र क्या रही होगी?
उत्तर: दूसरे पद को पढ़कर लगता है कि उस समय श्रीकृष्ण की उम्र चार से सात साल रही होगी तभी उनके छोटे-छोटे हाथों से सावधानी बरतने पर भी माखन बिखर जाता था।

भाषा की बात

प्रश्न 1. श्रीकृष्ण गोपियों का माखन चुरा-चुराकर खाते थे इसलिए उन्हें माखन चुरानेवाला भी कहा गया है। इसके लिए एक शब्द दीजिए।
उत्तर: माखन चुरानेवाला – माखनचोर

प्रश्न 2. श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।
उत्तर: श्रीकृष्ण के पर्यायवाची शब्द – गोविन्द, रणछोड़, वासुदेव, मुरलीधर, नन्दलाल।

प्रश्न 3.
कुछ शब्द परस्पर मिलते-जुलते अर्थवाले होते हैं, उन्हें पर्यायवाची कहते हैं। और कुछ विपरीत अर्थवाले भी। समानार्थी शब्द पर्यायवाची कहे जाते हैं।
पाठों से दोनों प्रकार के शब्दों को खोजकर लिखिए।

egyanarchive

उत्तर:

पर्यायवाची शब्द	बेनी – चोटी मैया – जननी, माँ, माता दूध – दुग्ध, पय, गोरस काढ़त – गुहत बलराम – दाऊ, हलधर ढोटा – सुत, पुत्र, बेटा
विपरीतार्थक शब्द	लम्बी – छोटी स्याम – श्वेत संग्रह – विग्रह विज्ञ – अज्ञ रात – दिन प्रकट – ओझल

egyanarchive